विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 2 अंक: 5 मार्च, 2009

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर ली है :

माननीय डॉ. मनमोहन सिंह

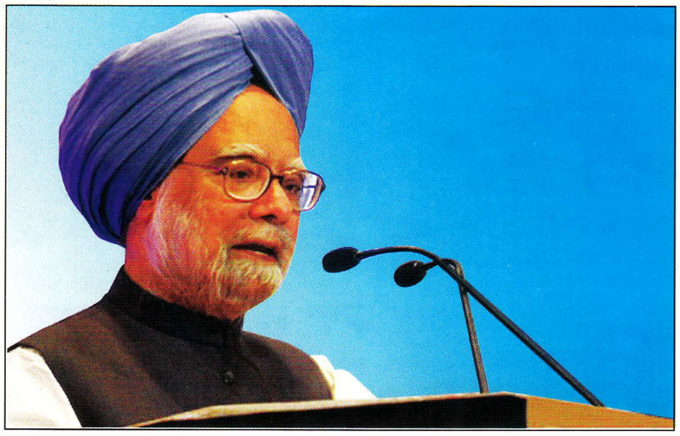

भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह

माननीय डॉ. मनमोहन सिंह का संदेश

भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी का विश्व हिंदी दिवस पर संदेश जिसे भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी ने विश्व हिंदी दिवस के समारोह में पढ़कर सुनाया -

''यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 10 जनवरी का दिन हर वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है । हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है ।

भाषा, अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ हमें समाज के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक पहलुओं से भी परिचित करवाती है। विगत कुछ वर्षों से भारतीय प्रतिभा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए आगे आ चुकी है । विदेशी बाज़ार भी भारत की ओर आकृष्ट हो रहे हैं । ऐसे में हिंदी भाषा का महत्व और भी बढ़ा है । हिंदी ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर ली है ।

हिंदी को एक सशक्त और समृद्ध भाषा बनाने में आप सबका सहयोग अपेक्षित है । सशक्त भाषा सशक्त राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकती है । अप्रवासी भारतीय समुदाय और विदेश स्थित भारतीय मिशन हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय और महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।''

हमें हिंदी को राष्ट्र संघ की भाषा बनाना है

– माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी

विश्व हिंदी सचिवालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन 17 जनवरी, 2009 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के प्रांगण में किया गया । भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति और मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी मुख्य अतिथि थे ।

मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा, '' आज आप सबके बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। शिक्षा और संस्कृति मंत्री के रूप में इस वर्ष मैं विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यक्रम में ही पहली बार आया हूँ । इसका कारण यह है कि हिंदी मेरे दिल की भाषा है और आप सभी मेरे परिवार के

मुख्य अतिथि माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी के साथ दाईं ओर महामहिम श्री मधुसूदन गणपति और बाईं ओर डॉ. विनोद बाला अरुण

सदस्य हैं । मेरे माता-पिता ने मुझे बचपन से ही भाषा और संस्कृति से प्रेम करना सिखाया था । उसका प्रभाव आज तक मेरे जीवन पर बना हुआ है । हिंदी कार्यक्रमों में जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। अभी तक मैं मॉरीशस की हिंदी से जुड़ा हुआ था, आज इस कार्यक्रम में आकर मैं विश्व हिंदी से जुड़ गया हूँ ।

आज के समारोह को मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ । यह कार्यक्रम हम भारत के हाई कमीशन के सहयोग से कर रहे हैं । भारत के कारण ही हिंदी है, भारत के कारण ही विश्व हिंदी सचिवालय है और भारत के कारण ही हम हैं । भारत नहीं होता तो तीनों नहीं होते । भारत का आशीर्वाद हमें सदा प्रेरणा देता है । आज भारत के हाई कमीश्नर श्री मधुसूदन गणपति जी हमारे साथ हैं । उनके

मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति और मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी द्वारा उद्‌बोधन

संदेश से हमें बहुत शक्ति मिली है । मैं उनका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।
हमने अभी भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का संदेश भी सुना। उन्होंने भाषा और संस्कृति के महत्व को समझाया और सभी प्रवासी समुदाय को भारत के साथ मिलकर हिंदी की प्रगति के लिए सक्रिय होने को कहा । यह संदेश बहुत प्रेरक है ।

हम मॉरीशस में भाषा और संस्कृति के विकास के लिए हमेशा से कार्य कर रहे हैं । हमारे राष्ट्रपिता चाचा रामगुलाम ने भाषा और संस्कृति को समाज की प्रगति के लिए बहुत आवश्यक माना । देश की सभी भाषाओं और संस्कृति को उन्होंने फलने-फूलने का अवसर दिया । आज हमारे प्रधानमंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम भी अपने पिता की तरह ही भाषा और संस्कृति को अपनी विकास नीति में बहुत महत्व दे रहे हैं।

आज के कार्यक्रम में मुझे यह भी बहुत अच्छा लगा कि आपने 1975 के प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेनेवाले हिंदी सेवकों के संस्मरण भी हमें सुनाए । इससे हमें हिंदी के इतिहास को जानने का अवसर मिला । हमने यह भी समझा कि विश्व में इतने लोग हिंदी को प्यार करते है । हम पुरानी यादों में खो गए ।

जब भी मैं भाषा और संस्कृति के बारे में सोचता हूँ, मुझे अपने पूर्वजों की याद आती है । विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने अपनी आत्मा के तेज को नहीं खोया था । मॉरीशस में हिंदी रोजी-रोटी की भाषा नहीं थी, फिर भी उन्होंने हिंदी को अपने गले से लगाए रखा क्योंकि हिंदी उनकी आत्मा की शक्ति थी । कठिन से कठिन दुख में भी वे रामायण गाते रहे । हिंदी के माध्यम से उन्होंने अपनी पहचान को बनाए रखा और अपने बच्चों को भाषा-संस्कृति का पाठ पढ़ाया । आज इस देश में जो कुछ भी हम हैं अपने पूर्वजों की कृपा से हैं।

हमारे लिए कितने आनंद की बात है कि हमारे पूर्वजों ने हिंदी को कठिन परिस्थितियों में बचाया और हमने उसे अनुकूल परिस्थितियों में फैलाया । आप सब को याद होगा कि 1975 के प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत के शहर नागपुर में हमारे राष्ट्रपिता सर सिवसागर रामगुलाम ने भारत की महान प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उपस्थिति में कहा था कि प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है । उन्होंने इसके अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्था बनाने का सुझाव दिया था और कहा था कि उसका कार्यालय मॉरीशस में हो । दोनों महान नेताओं के आशीर्वाद से विश्व हिंदी सचिवालय का जन्म मॉरीशस में हुआ ।

इस अवसर पर मैं मॉरीशस के एक और सपूत दयानंद लाल बसंत राय को भी नहीं भूल सकता । उन्होंने 1976 में मॉरीशस में हुए दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में यह प्रस्ताव पारित करवाया था कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बने । कालांतर में यही प्रस्ताव विश्व हिंदी सचिवालय का मुख्य उद्‌देश्य बना ।

मुझे आप सबको यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज हिंदी कमजोर भाषा नहीं है । आज भारत एक महान शक्ति के रूप में उभर रहा है। हिंदी शक्तिमान भारत की वाणी है । विश्वभर में फैले प्रवासियों की परंपरा और संस्कृति की वाणी है । हिंदी आज ज्ञान-विज्ञान की भाषा है । ऐसी सशक्त हिंदी आज करोड़ों स्वरों में विश्वभर में गूँज रही है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में मॉरीशस का योगदान हमेशा प्रवासी समाज के लिए प्रेरक रहा है । मॉरीशस में समाज और सरकार दोनों साथ मिलकर हिंदी के लिए कार्य करते हैं ।

समारोह में उपस्थित हिंदी प्रेमी

मॉरीशस के जन-जीवन में हिंदी का प्रभाव साफ दिखाई देता है । यहाँ प्राइमरी से टर्शरी तक हिंदी पढ़ाई जाती है । रेडियो, दूरदर्शन पर दिन रात हिंदी के स्वर गूँजते हैं । कथाओं-प्रवचनों में हिंदी का सबसे अधिक प्रयोग होता है । इसका फल है कि मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई जो विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम कर रही है ।

इस अवसर पर मैं भारत के सहयोग और मार्गदर्शन के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूँ । भारत माता का विशेष प्यार सदा मॉरीशस को मिलता रहा है । विश्व हिंदी सचिवालय के संचालन में भारत की बराबर की भागीदारी है ।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हमें न केवल अपने संकल्प को दोहराना है, बल्कि उसे पूरा करने के लिए आगे भी बढ़ना है । हमें हिंदी को समर्थ अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में फैलाना है और उसे राष्ट्र संघ की भाषा बनाना है । इसके लिए मैं विश्व हिंदी सचिवालय को एक उपयुक्त मंच मानता हूँ । मेरी कामना है कि सभी हिंदी संस्थाएं एक साथ मिलकर इस मंच से विश्व भर में हिंदी का प्रचार करें । हमें आपसी संघर्ष को मिटाना है और सहयोग

फैलाना है । यदि हम मॉरीशस में एकता का संदेश नहीं देंगे तो विश्व में एकता की बात कैसे करेंगे ?

आइए हम हिंदी के लिए मिलकर काम करें । मेरा सहयोग आपको सदा मिलता रहेगा । मैं विश्व हिंदी सचिवालय के कार्य को सदा ध्यान में रखता हूँ । महासचिव डॉ. श्रीमती अरुण से मेरा संपर्क सदा बना रहता है । मैं उन्हें कई वर्षों से जानता हूँ । उनका प्रवचन सुनने के लिए मैं हमेशा समय निकाल लेता हूँ । भाषा और संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान को मॉरीशस का बच्चा-बच्चा जानता है । उनके लीडरशिप में सचिवालय काम कर रहा है । भारत से आए उप महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र उन्हें पूरा सहयोग दे रहे हैं । जल्द ही दिल्ली में सचिवालय की बोर्ड मीटिंग होने वाली है । इसके बाद सचिवालय का काम और तेज़ी से आगे बढ़ेगा ।

मैं ऐसा मानता हूँ कि हिंदी को विश्व भर में फैलाने का मंच विश्व हिंदी सचिवालय के रूप में बन कर तैयार है । इसका जितना अधिक उपयोग हम करेंगे, उतनी ही हिंदी की प्रगति होगी । हमें हमेशा याद रखना चाहिए की भाषा को खोकर समाज अपनी पहचान को खो देता है ।

आप सभी हिंदी के सैनिक हैं । अत: मैं आपसे विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर निवेदन करता हूँ कि आइए, हम मिलकर हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए कार्य करें । आप सबको एक बार फिर नववर्ष का अभिनंदन । धन्यवाद और नमस्कार ।

मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने अपने उद्‌गार में कहा, ‘यह अत्यंत हर्ष की बात है कि आज हम विश्व हिंदी दिवस मनाने के लिए यहाँ पर एकत्र हुए हैं । वर्ष 2006 से भारत सरकार विश्व भर में स्थित हमारे सभी उच्चायोगों और दूतावासों आदि के माध्यम से प्रति वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाती है । इस वर्ष भी भारत सहित विश्व के अनेक देशों में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस अत्यंत उत्साह और हर्ष के साथ मनाया गया । भारतीय मिशनों के अलावा, हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी विभिन्न देशों की अनेक संस्थाएं भी विश्व हिंदी दिवस को धूमधाम से मनाती हैं ।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर समस्त विश्व को अपनी शुभकामनाएं और संदेश दिया है । प्रधानमंत्री जी का संदेश मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ । (महामहिम द्वारा पढ़ा गया प्रधानमंत्री जी का संदेश प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित है) ।

प्रधानमंत्री जी के संदेश की प्रति मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी सभी संस्थाओं को इस अनुरोध के साथ भिजवायी गयी थी कि प्रधानमंत्री जी के संदेश का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाए। मुझे खुशी है कि हमारे अनुरोध को स्वीकार करते हुए यहां के हिंदी संगठन तथा हिंदी अध्यापक यूनियन ने 10 जनवरी को अपने-अपने स्तर पर विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया तथा माननीय प्रधानमंत्री जी का संदेश श्रोताओं तक पहुँचाया । मैं इन संस्थाओं के प्रति धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में वे अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे ।

विशेष अवसरों का अपना महत्व होता है । इनका आयोजन निर्धारित दिन या तारीख को ही किया जाना उचित और गरिमापूर्ण होता है । किन्हीं कारणों से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा यह कार्यक्रम 10 जनवरी को आयोजित नहीं किया जा सका था । अत: सचिवालय द्वारा यह आयोजन भारतीय उच्चायोग के साथ मिलकर आज किया जा रहा है।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी उद्‌गार प्रकट करते हुए

विश्व हिंदी दिवस का यह दिन विश्व हिंदी समुदाय के लिए एक गौरव का दिन है । यह अवसर इस बात का सूचक है कि आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी एक सशक्त और गरिमापूर्ण पहचान बना रही है तथा निरंतर विकास की ओर अग्रसर है । भारत के गांवों, कस्बों से निकलकर हिंदी की विश्व मंच पर प्रतिष्ठित होने तक की सैकड़ों वर्षों की यह यात्रा सतत साधना और संघर्ष की यात्रा रही है । अप्रवासी भारतीय समुदाय की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने और सम्मान दिलाने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने अपना योगदान दिया है, वे सभी साधुवाद के पात्र एवं वंदनीय हैं । मैं उन सभी को उनके सत्प्रयास और संघर्ष के लिए नमन करता हूँ ।

भाषा केवल संप्रेषण या अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं होती, वह विचारों की वाहक भी होती है । हमारे लिए यह गर्व की बात है कि हिंदी विश्व की प्राचीनतम तथा महानतम सांस्कृतिक-बौद्धिक और आध्यात्मिक परंपराओं की वाहक भाषा है । इसलिए हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, यह एक संस्कृति भी है--प्रेम और अहिंसा की संस्कृति, सहिष्णुता और सद्‌भाव की संस्कृति । हिंदी की संस्कृति हमेशा से प्रेम, शांति और सह-अस्तित्व की राह दिखाती आयी है । दुनिया में हिंदी के महत्व को समझा जा रहा है तथा हिंदी की सुगंध दुनिया को आकृष्ट कर रही है । दुनिया भर में हिंदी की लोकप्रियता और उसके अध्ययन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है । आज दुनिया में लगभग 130 देशों में हिंदी फैली है । 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन और शोध हो रहा है । यह हिंदी का प्रचार तथा हिंदी भाषी जन-समुदाय और संस्कृति का

प्रभाव ही है कि आज विश्व के कई राष्ट्रों में हिंदी भाषा सीखने को प्रोत्साहन दिया जा रहा है । रूस, बल्गारिया और पूर्वी यूरोपीय देशों में हिंदी के अध्ययन और सोच-विचार का विकास हो रहा है। हिंदी के कई बड़े विद्वान इन देशों से निकलकर आए हैं । अमेरिका के स्टेट डिपार्टमेंट ने अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा सीखने का सुझाव दिया है ।

हिंदी के रूप में हमें विचारों का सशक्त वाहक मिला है । अपनी इस समृद्ध भाषा के माध्यम से हम गंभीर से गंभीर और सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों को सरलता और सहजता से अभिव्यक्त कर सकते हैं । विशाल शब्दकोश तथा व्यवस्थित और वैज्ञानिक व्याकरण वाली हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसे जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं और जैसा लिखते हैं वैसा ही पढ़ते हैं । अपनी इसी विशेषता के कारण आज हिंदी संचार और सूचना प्रौद्योगिकी की एक सशक्त भाषा बनकर उभरी है । दूरदर्शन, रेडियो, पेजर, केबल, इंटरनेट, ई-मेल, एस.एम.एस., मोबाइल फोन आदि ने हिंदी के प्रयोग को नए आयाम दिए हैं । हिंदी में काम करने के लिए आज बाज़ार में अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं । हिंदी की अनेक वेबसाइट भी आज उपलब्ध हैं तथा बहुत सी अन्य भाषाओं की वेबसाइटों पर भी हिंदी में ई-मेल आदि भेजने की सुविधा है । भविष्य उसी का होता है जो परिवर्तन के साथ चलता है ताकि विकास की दौड़ में पीछे न रह जाए। यह उत्साहजनक है कि हिंदी ने सूचना, मनोरंजन और संचार से जुड़े लगभग सभी क्षेत्रों में मजबूती से अपने पैर जमाए हैं । हिंदी के विकास का रथ निरंतर अपने मार्ग पर अग्रसर है । हिंदी के इस विकास रथ को रोकना अब किसी के वश की बात नहीं है । बाज़ारवाद के इस समय में जरूरत इस बात की है कि साहित्य-सृजन, बोल-चाल तथा परस्पर संपर्क में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक विस्तार देकर बाज़ार पर हिंदी का वर्चस्व बढ़ाया जाए ।

विश्व भर में फैला विशाल हिंदी-भाषी और हिंदी-प्रेमी समुदाय हिंदी को विश्व-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित देखना चाहता है और चाहता है कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बने । यह हम सबके सामूहिक और गहन प्रयासों से ही संभव हो सकेगा । विज्ञान,तकनीकी, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए यदि हिंदी को इस क्षेत्र में गति दी जाएगी तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्व मंच पर सिरमौर और साम्राज्ञी बनकर उभरेगी तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं भाषा भी अवश्य बनेगी ।

इस अवसर पर मॉरीशस से 10-14 जनवरी, 1975 को नागपुर, भारत में हुए प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने गए श्री सुरेश रामबर्न, श्री सूर्यदेव सिबरत, श्री महेश रामजियावन और श्री रामदेव धुरंधर ने अपने ऐतिहासिक संस्मरण सुनाए । ये सारे संस्मरण रोचक और जीवंत होने के साथ ही इतिहास के भूले-बिसरे क्षणों का पुनः स्मरण कराने में समर्थ रहे । श्रोताओं ने इनका भरपूर आनंद उठाया ।

कार्यक्रम के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती)विनोद बाला अरुण ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा, ''हमारे लिए यह गौरव की बात है कि आज हम 'विश्व हिंदी दिवस ' सचिवालय और भारतीय उच्चायोग के संयुक्त

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के संस्मरण सुनाने वाले विद्वान - श्री सूर्यदेव सिबरत, श्री महेश रामजियावन, श्री सुरेश रामबर्न और श्री रामदेव धुरंधर

तत्वावधान में मना रहे हैं और इस अवसर पर शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी और भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति उपस्थित हैं । इन दोनों महानुभावों का एक साथ उपस्थित होना हिंदी की प्रगति के लिए मॉरीशस और भारत की आंतरिक प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक है । इन दोनों की उपस्थिति में हमारा विश्व हिंदी दिवस मनाना बहुत ही सार्थक एवं उपयुक्त लग रहा है क्योंकि सचिवालय के संचालन में भारत और मॉरीशस दोनों सरकारों की बराबर की भागीदारी है । ''

विश्व हिंदी दिवस के ऐतिहासिक संदर्भ को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा, ''विश्व हिंदी दिवस का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसी दिन अर्थात् 10 जनवरी सन् 1975 को संसार भर में फैले हिंदी प्रेमियों ने व्यावहारिक और ठोस रूप में अपने विराट रूप को देखा और समझा था। इसीसे कालांतर में विश्व हिंदी सचिवालय का जन्म हुआ जिसका उद्देश्य है -- हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रचार-प्रसार करना और हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के कार्य को आगे बढ़ाना । इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए चिंतन मनन करना और बराबर कार्यरत रहना हर हिंदी भाषी का परम कर्तव्य है । ''

इस अवसर पर महासचिव महोदया ने भारत और मॉरीशस दोनों सरकारों से अपील की कि वैश्विक हिंदी समुदाय को जागरूक रखने और एक सूत्र में जोड़ने के लिए प्रतिवर्ष किसी न किसी रूप में, किसी न किसी देश में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जाए । यह आयोजन प्रवासी भारतीय दिवस की तरह ही सुचिंतित, सुनियोजित और नियमित हो जिससे हिंदी के वैश्विक विस्तार को तीव्र गति प्राप्त हो सके ।

समारोह के अंत में सचिवालय के उप महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने मुख्य अतिथि माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, उप उच्चायुक्त श्री संजीव रंजन, विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के विद्वान सदस्य श्री अजामिल माताबदल एवं श्री सत्यदेव टेंगर, इंदिरागाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक श्रीमती अनिता अरोड़ा तथा वहाँ के समस्त अधिकारियों, प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के संस्मरण सुनानेवाले सभी विद्वानों, एम बी सी और प्रेस तथा उपस्थित सभी सुधी श्रोताओं को हार्दिक धन्यवाद दिया । ●●

विश्व हिंदी सचिवालय की प्रथम वर्षगांठ

मुख्य वक्ता प्रो. चमन लाल व्याख्यान देते हुए

विश्व हिंदी सचिवालय ने 11फरवरी, 2009 को अपने आधिकारिक कार्यारंभ की प्रथम वर्षगांठ इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स में मनाई। सचिवालय की शासी परिषद के निर्णय के अनुसार सचिवालय ने पिछले साल इसी तारीख से आधिकारिक रूप से कार्य करना प्रारंभ किया था । इस अवसर पर ' विश्व भाषा हिंदी : संभावनाएं और दायित्व ' विषय पर व्याख्यान देने के लिए प्रोफेसर चमन लाल को आमंत्रित किया गया था।

सचिवालय की महासचिव डॉ.(श्रीमती) विनोद बाला अरुण ने अपने स्वागत भाषण में इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भारतीय भाषा केंद्र, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. चमन लाल के प्रति आभार प्रकट किया कि उन्होंने सचिवालय का निमंत्रण स्वीकार करके ' विश्व भाषा हिंदी : संभावनाएं और दायित्व ' जैसे गंभीर विषय पर व्याख्यान देने की स्वीकृति दी । हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए जो लोग कार्यरत हैं, उनके लिए यह विषय बहुत महत्वपूर्ण है । हमें हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना है । इसके लिए संभावनाओं को तलाशना है और इस दिशा में कार्यरत होने के लिए अपने उत्तरदायित्व को समझकर आगे बढ़ना है।

भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जय प्रकाश कर्दम द्वारा संबोधन

प्रोफेसर चमन लाल ने विश्व हिंदी सचिवालय को प्रथम वर्षगांठ पर बधाई दी । उन्होंने आँकड़ों के साथ बताया कि हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोले जानी वाली भाषा है । हिंदी भारत के अतिरिक्त मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद एंड टोबेगो में प्रमुख स्थान रखती है । इन देशों की आधी आबादी हिंदी भाषी क्षेत्रों से आकर बसी है और आज भी हिंदी या भोजपुरी से अपना जीवंत संपर्क रखे हुए है । इन छह देशों के अतिरिक्त 70 से ज्यादा देशों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है और हिंदी फ़िल्मों व गीतों की पहुँच 100 से ज्यादा देशों में है । प्रो. चमन लाल ने हिंदी को विश्वभाषा बनाने के लिए हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली बढ़ाने व मूल हिंदी में समाज ज्ञान-विज्ञान की उच्च-स्तरीय पुस्तकों की रचना पर बल दिया ।

इस आयोजन में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जय प्रकाश कर्दम ने विश्व हिंदी सचिवालय को प्रथम वर्षगांठ पर बधाई दी । उन्होंने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लिए एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता पर बल दिया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के माननीय सदस्य एवं हिंदी संगठन, मॉरीशस के अध्यक्ष श्री अजामिल माताबदल ने भी अपने विचार रखे। ●●

हिंदी विश्व परिक्रमा

विश्व हिंदी दिवस की पूर्व संध्या 9 जनवरी 2009 को मॉरीशस के राष्ट्रीय टेलिविजन पर 'हिंदी विश्व परिक्रमा ' शीर्षक से 26 मिनट का एक कार्यक्रम दिखाया गया जिसे विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण ने प्रस्तुत किया था ।

इस कार्यक्रम में उत्तरी अमेरिका, यूरोप, एशिया, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के प्रतिनिधियों को चुना गया था जिससे हिंदी के वैश्विक स्वरूप की एक झलक मिल सके । यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्सस एट ऑस्टिन (अमेरिका) के हिंदी-उर्दू फ्लैगशिप के निदेशक प्रो. हरमन वान ऑल्फन, वारसा विश्वविद्यालय, पोलैंड की प्रो. दानुता स्ताशिक, जर्मनी की प्रो. तात्याना ओरांस्काया, तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़, जापान के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. ताकेशि फुजिइ, और ओसाका, जापान के पूर्व प्राध्यापक डॉ. तोमिओ मिज़ोकामि, यूनिवर्सिटी ऑफ क्वाजुलु, नाटाल, दक्षिण अफ्रीका की प्राध्यापिका प्रो. उषा शुक्ला और आस्ट्रेलिया के हिंदी सेवक श्री सुनील श्रीवास्तव ने अपने-अपने देशों में हिंदी की स्थिति की जानकारी दी । इस कार्यक्रम की लोगों ने बहुत सराहना की क्योंकि संभवत: पहली बार कई लोगों ने गैर भारतीय मूल के लोगों को इतनी प्रवाहपूर्ण और शुद्ध हिंदी बोलते सुना था । अनेक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के अधिकारियों और हिंदी के विद्वानों ने इस कार्यक्रम को एक ऐतिहासिक महत्व का कार्यक्रम बताया ।

कार्यक्रम का निर्देशन मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन के श्री हरेश व्यास ने किया था । कार्यक्रम की खूबी यह थी कि अधिकांश रेकॉर्डिंग महासचिव महोदया ने उस समय की थी जब वे तोक्यो में संपन्न हिंदी उर्दू शिक्षण के शताब्दी समारोह में दिसंबर 2008 में भाग लेने गयी थीं । आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के विद्वानों से साक्षात्कार इंटरनेट के माध्यम से लिया गया था। ●●

महासचिव की ओर से

जन-बल बने भाषा-बल

भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने 9 जनवरी, 2009 को चेन्नई में प्रवासी भारतीय दिवस के समापन समारोह में प्रवासी भारतीयों के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि संसार के 110 देशों में बसे प्रवासी भारतीयों की आबादी लगभग ढाई करोड़ है । इनकी गाथा साधारण व्यक्तियों के असाधारण साहस और उद्यम की गाथा है ; यह सुदूर देशों में जाकर बसनेवाले प्रवासी भारतीयों के संघर्ष, उत्पीड़न एवं अन्ततः उन पर विजय की गाथा है । हमें गर्व है कि आज वे एक अत्यंत सुशिक्षित समाज के रूप में अपने निवास के देशों की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं ।

महामहिम के ये उद्‌गार केवल प्रवासी भारतीयों के लिए ही नहीं, अपितु हर भारतवासी के लिए प्रेरक हैं । कोई भी समाज अपनी प्रतिभा, उद्यमशीलता और लगन से ही समृद्धि और प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है । आज परिस्थिति बड़ी अनुकूल है । भारत एक समृद्ध और आधुनिक ज्ञान-संपदा संपन्न राष्ट्र के रूप में उभर रहा है और विश्व भर में फैला भारतवंशी समाज भी उन्नति के शिखर को छू रहा है ।

किसी समाज की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से होती है । आज भारतीय संस्कृति के मूलभूत विचारों का पूरे विश्व में बोल बाला है । भारतीय आहार-व्यवहार, योग-आयुर्वेद और अध्यात्म-दर्शन की उपयोगिता को विश्व श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर रहा है । हमें भाषा के क्षेत्र में भी भारत के वर्चस्व को स्थापित करना है । जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश है । आज समय आ गया है कि भारत का जनसंख्या-बल उसकी भाषा और संस्कृति का बल बने । इस दृष्टि से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का दावा अत्यंत तर्कसंगत है क्योंकि हिंदी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा होने के साथ ही विश्व की तीन सब से अधिक बोली जानेवाली भाषाओं में एक है । हम प्रवासी भारतीय भारत के साथ एक विशाल शक्ति के रूप में खड़े होकर हिंदी को उसका बहुप्रतीक्षित स्थान दिलाने का अभियान चला सकते हैं । भारत के वैश्विक हित की प्रतिष्ठा के लिए हमें हिंदी के ध्वज को लेकर आगे बढ़ना है । विश्व के 110 देशों में बसा भारतवंशी समुदाय जैसे व्यावसायिक और अन्य क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है, वैसे ही उसे भाषा की प्रतिष्ठा के लिए भी आस्था और विश्वासपूर्वक आगे बढ़ना है ।

हमें इतिहास के उस प्रेरक प्रसंग को याद करना होगा जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत के स्वाधीनता-आंदोलन में हर भारतवासी हिंदी को लेकर आगे बढ़ा था । हिंदी भारत की जनभाषा बनकर उभरी थी । परिणामस्वरूप वह स्वतंत्रता के बाद भारत की राजभाषा बनी । आज इसी प्रेरणा के साथ भारत के नेतृत्व में हिंदी को विश्वभाषा की प्रतिष्ठा दिलाने के लिए हमें कार्य करना है जिससे वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन सके ।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी का पहुँचना भारत की राजभाषा का पहुँचना होगा । इससे विश्वव्यापी भारतीय अस्मिता को गौरव प्राप्त होगा । इससे हर भारतीय और भारतवंशी का मस्तक उन्नत होगा । अतः हर भारतवंशी का यह कर्तव्य बनता है कि वह मूल रूप में चाहे भारत के किसी भी राज्य का क्यों न हो, हिंदी उसकी मातृभाषा हो या न हो, परंतु हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ तक ले जाने के अभियान का वह सक्रिय सहयोगी बने । संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्वमंच पर जब हिंदी के स्वर विश्वभाषा बनकर गूँजेंगे तब सभी भारतीय भाषाओं का मान बढ़ेगा और संसार भर में फैले भारतीय समुदाय की आंतरिक एकता भी मुखरित होगी । ••

(डॉ. विनोद बाला अरुण)

1, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली - 110 001
12 जनवरी, 2009

मान्यवर,

विश्व हिंदी सचिवालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'हिंदी' को प्रतिष्ठापित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण संस्थान बनेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है । सचिवालय द्वारा ' विश्व हिंदी समाचार ' का प्रकाशन भी इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है ।

दिसंबर, 2008 का अंक यद्यपि अपने में लघु प्रयास है किंतु उसमें संगृहीत लेख व सामग्री विभिन्न देशों में हिंदी के प्रयोग का दिग्दर्शन कराता है ।

'मॉरीशस' लघु भारत का स्वरूप है जहां भारतीय संस्कृति भी पुष्पित और पल्लवित है ।

शुभकामनाएं स्वीकारें ।

भवदीय,
(डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय)
संसद सदस्य (लोक सभा)

संपादकीय

विश्व हिंदी दिवस

' विश्व हिंदी समाचार ' का प्रवेशांक मार्च, 2008 में प्रकाशित हुआ था । हमारे त्रैमासिक प्रकाशन के इस 5वें अंक के साथ यह अपनी यात्रा के द्वितीय वर्ष में प्रवेश कर रहा है । पिछले एक वर्ष के दौरान हमने विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी कुछ संस्थाओं की गतिविधियों से आपको अवगत कराने का एक लघु प्रयास मात्र किया है । इस वर्ष हिंदी से जुड़ी कुछ अन्य गतिविधियों को एक व्यापक फलक प्रदान करने की चेष्टा करेंगे । हमारे इस अभियान में हम आपके सक्रिय सहयोग की कामना करते हैं ।

जनवरी, 2009 हिंदी के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा। 7-9 जनवरी को चेन्नई में ' प्रवासी भारतीय दिवस ' के भव्य आयोजन के दौरान ' प्रवासी भारतीय : भाषा और संस्कृति संरक्षण ' विषय पर भी एक सत्र रखा गया था । प्रवासी भारतीय दिवस पर जिस भाषा के संरक्षण की ओर हमारा ध्यान अनायास ही जाता है, वह निश्चित ही हिंदी है ।

हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के लिए 10 जनवरी का दिन ' विश्व हिंदी दिवस ' के रूप में मनाने का आह्वान करते हुए भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी ने यह आशा व्यक्त की है कि विदेशों में बसे भारतीय समुदाय और विदेश स्थित भारतीय मिशन हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय और महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं । भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने 10 जनवरी को ' विश्व हिंदी दिवस ' का भव्य आयोजन नई दिल्ली में किया । इस अवसर पर विदेश राज्यमंत्री माननीय श्री आनंद शर्मा जी ने हिंदी की वैश्विक स्थिति, इसके प्रचार-प्रसार में केंद्र सरकार की भूमिका तथा भावी योजनाओं से उपस्थित विद्वानों एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा व नई दिल्ली के उन छात्रों को अवगत कराया जो विदेशों से हिंदी पढ़ने भारत आए हुए हैं । इस अवसर पर उन विदेशी छात्रों ने भी अपने-अपने विचार प्रकट करते हुए इस बात पर खुशी ज़ाहिर की कि उन्हें भारत आकर हिंदी पढ़ने का मौका मिला ।

भारत की राजधानी नई दिल्ली के अलावा 'विश्व हिंदी दिवस' के आयोजन मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, भारतीय दूतावास और एल्ते विश्वविद्यालय, बुदापैश्त, हंगरी, हिंदी संगठन एवं हिंदी अध्यापक यूनियन, मॉरीशस तथा देश-विदेश के अन्य शहरों में भी हुए हैं । इस अंक में विश्व हिंदी सचिवालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ' विश्व हिंदी दिवस ' समारोह की रिपोर्ट भी प्रकाशित की जा रही है । इस रिपोर्ट में समारोह के मुख्य अतिथि मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी एवं मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति के भाषण पठनीय हैं । ये सारगर्भित संदेश सचिवालय के उस मूल उद्देश्य की प्राप्ति की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं जिसके लिए दोनों देशों ने मिलकर विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की है अर्थात् हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा बनाना ।

'विश्व हिंदी दिवस ' की तिथि की जानकारी विश्व भर में फैले सभी हिंदी प्रेमियों एवं संस्थाओं को नहीं हो पाई है । ये सभी प्रति वर्ष 14 सितंबर को ही ' हिंदी दिवस ' के रूप में जानते हैं और मनाते हैं । ऐसा भी होता है कि हिंदी की कुछ स्वैच्छिक संस्थाएँ अपनी-अपनी सुविधानुसार ' हिंदी दिवस ' का आयोजन वर्ष में एक बार किसी भी समय कर लेती हैं । ऐसी सभी संस्थाओं से अनुरोध है कि वे यदि संभव हो तो हिंदी का वैश्विक वातावरण बनाने के लिए 10 जनवरी को ही 'विश्व हिंदी दिवस ' मनाने का प्रयास करें जिससे कि हिंदी की अनुगूँज वैश्विक स्तर पर एक साथ सुनाई दे। इस दिशा में बुदापैश्त, हंगरी जैसे शहर अपवाद हो सकते हैं ।

विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों से अनुरोध है कि वे अपनी अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए की जा रही विभिन्न गतिविधियों की रिपोर्ट और तसवीरें हमेशा की तरह हमारे निम्न पते पर नियमित रूप से भिजवाते रहें ताकि दुनिया के किसी भी भाग में हिंदी के संबंध में चल रही गतिविधियों से समग्र विश्व को अवगत कराया जा सके । ●●

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण
संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

बधाई

डॉ. विनोद बाला अरुण

डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण को प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ने वर्ष 2007 के लिए 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान' से अलंकृत किया है । यह सम्मान उन्हें विश्व स्तर पर हिंदी की सेवा के लिए प्रदान किया गया। इससे पूर्व सन् 2004 में मानस संगम, कानपुर, भारत द्वारा उन्हें 'मानस संगम साहित्य सम्मान' और 2007 में अखिल विश्व हिंदी समिति न्यूयार्क द्वारा 'साहित्य शिरोमणि' सम्मान प्राप्त हो चुके हैं ।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा वर्ष 2007 का प्रतिष्ठित 'भारत-भारती' सम्मान इस बार प्रख्यात हिंदी कवि डॉ. केदारनाथ सिंह को दिया गया है । इसके साथ ही कथाकार श्री रवींद्र कालिया को 'लोहिया सम्मान', डॉ. बालशौरी रेड्डी को 'महात्मा गांधी सम्मान ', डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को 'हिंदी गौरव सम्मान', डॉ. जितेंद्रनाथ पाठक को 'पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान ', श्री शांति सहाय 'नलिनी' को 'अवंतीबाई सम्मान' तथा डॉ. बाबूलाल गर्ग को 'मधु लिमये स्मृति पुरस्कार' प्रदान किए गए हैं ।

सम्मान समारोह का आयोजन 27 फरवरी, 2009 को यशपाल सभागार, हिंदी भवन, लखनऊ, भारत में किया गया । कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शंभुनाथ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और मुख्य अतिथि थे माननीय श्री नकुल दुबे, नगर विकास मंत्री । कार्यव्यस्तता के कारण डॉ. अरुण का भारत जाना संभव नहीं हो सका ।

विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से सभी सम्मानित विद्वानों को हार्दिक बधाई ।

श्री गोविंद मिश्र

वरिष्ठ हिंदी कथाकार गोविंद मिश्र को साहित्य अकादमी पुरस्कार

समकालीन कथा लेखन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले प्रसिद्ध हिंदी कथाकार श्री गोविंद मिश्र को उनके उपन्यास 'कोहरे में क़ैद रंग' के लिए वर्ष 2008 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया । इस बार हिंदी साहित्य के लिए 13 लेखकों की पुस्तकें नामित हुई थीं। सर्वश्री प्रभाकर श्रोत्रिय, डॉ . सूर्यप्रकाश दीक्षित और प्रो. लाल चंद गुप्त की निर्णायक समिति ने श्री गोविंद मिश्र की इस पुस्तक को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया ।

अब तक श्री गोविंद मिश्र के दस उपन्यास, ग्यारह कहानी संग्रह, पाँच यात्रा वृतांत, चार निबंध संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । साहित्य अकादमी पुरस्कार के अलावा श्री गोविंद मिश्र को उनके प्रसिद्ध उपन्यास ' पाँच आंगनों वाला घर ' के लिए वर्ष 1998 का प्रतिष्ठित व्यास सम्मान एवं समग्र साहित्यिक योगदान के लिए भारत के राष्ट्रपति जी द्वारा ' सुब्रह्मण्यम भारती सम्मान ' सहित अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत व सम्मानित किया गया है । भारत सरकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत श्री मिश्र जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया और हंगरी की यात्रा कर चुके हैं । वे 1996 में त्रिनिदाद एंड टोबेगो में आयोजित पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने वाले भारत के प्रतिनिधि मंडल में शामिल थे । उन्होंने मॉरीशस की हिंदी प्रचारिणी सभा की स्वर्ण जयंती में भारत का प्रतिनिधित्व किया था ।

श्री गोविंद मिश्र को विश्व के समस्त हिंदी पाठकों की ओर से बधाई ।

विश्व में हिंदी की स्थिति मज़बूत है :

अच्युतानंद मिश्र

बाएं से श्री रघु ठाकुर, श्री अच्युतानंद मिश्र, प्रो. रमेश दवे, श्री शुकदेव प्रसाद दुबे एवं डॉ. कृष्णकुमार आधार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. जवाहर कर्नावट

भोपाल में 10 जनवरी, 2009 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की प्रतिनिधि संस्था मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा हिंदी भवन में किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र थे। प्रमुख वक्ताओं में बर्मिंघम (यू.के) के गीतांजलि बहुभाषिक समाज के संस्थापक अध्यक्ष डॉ कृष्णकुमार, प्रखर लोहियावादी विचारक श्री रघु ठाकुर, भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री शुकदेव प्रसाद, वैश्विक हिंदी मीडिया के विशेषज्ञ एवं बैंक ऑफ बड़ौदा के वरिष्ठ प्रबंधक डॉ जवाहर कर्नावट ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात शिक्षाविद् एवं समिति के अध्यक्ष प्रो. रमेश दवे ने की।

संगोष्ठी के प्रारंभ में आधार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. जवाहर कर्नावट ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस की संकल्पना वैश्विक स्तर पर हिंदी सुस्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके माध्यम से विश्व भर में स्थापित भारतीय दूतावासों में भी हिंदी के प्रति चेतना जागृत होगी तथा भारवंशियों को एकता के सूत्र में भी बांधा जा सकेगा। आपने हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साथ ही देवनागरी लिपि पर मंडराते खतरे के प्रति भी सभी को आगाह किया। प्रखर लोहियावादी विचारक श्री रघु ठाकुर ने गोष्ठी में कहा कि भारतीय भाषाओं को जोड़ने का काम हमारे देश में बहुत पहले हो जाना चाहिए था, वह नहीं हुआ है। भारतीय भाषाओं को जोड़ने का यह महत्वपूर्ण काम करके ही हिंदी विश्व भाषा बन सकती है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति, श्री अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि विदेशों में भारतवंशी अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति निश्चित ही रुचि ले रहे हैं। इस कारण विश्व में हिंदी की स्थिति निश्चित ही मजबूत है। हिंदी को देश और विश्व में सम्मानजनक स्थान दिलवाने के लिए देशवासियों में उसके प्रति आग्रह और स्वाभिमान होना बहुत आवश्यक है। श्री मिश्र ने हिंदी को साहित्येतर विषयों और विमर्श की भाषा न बनाने के लिये हिंदी के साहित्यकारों को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा कि जब तक हिंदी में साहित्येतर विषयों में पुस्तकें नहीं आएंगी और दर्शन आदि विशिष्ट विषयों पर लगातार विमर्श नहीं होंगे तब तक विश्व भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएं उज्वल नहीं हो पाएंगी।

यू के की बहुभाषीय संस्था गीतांजलि के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार ने अनुभव के आधार पर कहा कि यू के में हिंदी का परिदृश्य धीरे-धीरे सुधर रहा है। वहां के बच्चे अब हिंदी पढ़ने के लिए आगे आ रहे हैं। आपने आग्रह किया कि प्रवासी भारतीय अपनी ताकत को जोड़कर विदेशों में काम करें तो हिंदी की प्रगति के लिये काफी काम हो सकता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी शुकदेव प्रसाद दुबे ने आग्रह किया कि हिंदी भाषियों को आत्म विश्लेषण कर अपने स्वत: के स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिये गंभीरता से सोचना और काम करना चाहिए।

कार्यक्रम में न्यायमूर्ति श्री आर.डी.शुक्ला, मध्यप्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक कैलाशचंद्र पंत, हिंदी भवन न्यास की न्यासी श्रीमती कमला सक्सेना, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. आशा शुक्ला, डॉ हुकुमपाल सिंह 'विकल', डॉ. विनय राजाराम, प्रख्यात चित्रकार डॉ. राजाराम और कैलाश तिवारी सहित अनेक साहित्यकार एवं हिंदी प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

राजभाषा हिंदी हीरक जयंती एवं होली काव्य संगीत संगोष्ठी

7 मार्च 2009 को टोरंटो, कनाडा में, 'सद्भावना हिंदी साहित्यिक संस्था' व 'वसुधा' हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका के तत्वावधान में राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती व होली हेतु एक काव्य-संगीत संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। ये दोनों संस्थाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में सतत संलग्न हैं। यह आयोजन उस श्रृंखला से जुड़ी एक कड़ी है।

हिंदी प्रेमियों के एकत्रीकरण, मिलन व अल्पाहार के उपरांत मां सरस्वती का पूजन संपन्न हुआ। दीप प्रज्वलित किया मुख्य अतिथि तत्कालीन कोंसुलाध्यक्ष माननीय श्री सुरेंद्र अरोरा व श्रीमती नीलिमा अरोरा ने। सरस्वती वंदना की अमृता शाक्य ने और उनेक सुर में सुर मिलाया गर्व से अभिभूत सभी उपस्थित हिंदी-प्रेमियों ने।

संगोष्ठी के प्रतिभागी हैं - श्री सुरेंद्र अरोरा, श्री दुबे उमादत्त अनजान, श्री राजीव शर्मा, श्री वीरेंद्र ढींगरा, श्री शांति स्वरूप सूरी, श्री जगमोहन मेहरा, श्री गोपाल बघेल, श्री आनंद गोयल, श्रीमती दीप एटवाल, डॉ. प्रीति धामणे, कुमारी अमृता शाक्य, आचार्य संदीप कुमार त्यागी, श्री सरन घई और श्रीमती स्नेह ठाकुर।

इस संगोष्ठी के दौरान संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची में हिंदी हीरक जयंती के उपलक्ष्य में जुड़ने वाली शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'काव्य - हीरक' की घोषणा भी की गई।

संस्था की अध्यक्ष एवं वसुधा की संपादक-प्रकाशक श्रीमती स्नेह ठाकुर ने विशिष्ट अतिथियों, श्रोताओं व संस्था के सदस्यों के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए उन्हें टोरंटो, कनाडा में इस सर्वप्रथम आयोजित राजभाषा हिंदी हीरक जयंती को सफल बनाने हेतु धन्यवाद दिया। राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये हुए होली के विविध रसों से प्लावित यह समारोह संपन्न हुआ।

स्नेह ठाकुर : टोरंटो

जापान में हिंदी की गूँज

प्रो. युताका असादा, प्रो. दानुता स्तशिक, प्रो. तोशिओ तनाका, महामहिम श्री हेमंत कृष्ण सिंह, प्रो. कोबा याशी, प्रो. हरमन वान ऑल्फेन, डॉ. विनोद बाला अरुण और प्रो. ताकेशि फुजिइ

तोक्यो यूनिवर्सिटी आफ फॉरेन स्टडीज़, जापान ने 12 से 14 दिसंबर 2008 को भारतीय दूतावास तोक्यो, जापान के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी - उर्दू शिक्षण का शताब्दी समारोह बहुत भव्य रूप में मनाया । विश्व के अनेक देशों के लगभग 40 विद्वानों ने इसमें भाग लिया । विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का प्रतिनिधित्व इस सम्मेलन में सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण ने किया ।

सम्मेलन के आयोजन में आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो. ताकेशि फुजिइ और सह अध्यक्ष प्रो. युताका असादा के साथ ही साथ संयोजक प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण की महत्वपूर्ण भूमिका रही । प्रो. ऋतुपर्ण तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, जापान में हिंदी के अतिथि प्राध्यापक हैं । उन्होंने पूरे सम्मेलन का विद्वतापूर्ण ढंग से संचालन किया और विदेश से आए सभी प्रतिनिधियों की सुख - सुविधा का बहुत ध्यान रखा । पूरे सम्मेलन के सूत्रधार के रूप में उनकी तत्परता और सिद्धता सर्वत्र दिखाई दे रही थी । भारत के राजदूत महामहिम श्री हेमंत कृष्णसिंह ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और प्रो. ताकेशि फुजिइ, सम्मेलन के अध्यक्ष और हिंदी-विभागाध्यक्ष ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया । अपने संबोधन में महामहिम ने कहा कि संख्या की दृष्टि से हिंदी विश्व की एक अग्रणी भाषा है ।

इस सम्मेलन में छ: शैक्षिक सत्रों का आयोजन किया गया था । शैक्षिक सत्रों की संरचना विदेशी भाषा के रूप में हिंदी - शिक्षण की आवश्यकताओं के अनुरूप की गयी थी । सभी वक्ताओं ने बड़े मनोयोग से विषयवस्तु का मंथन किया और सार्थक निष्कर्ष प्राप्त किए। प्रथम सत्र का विषय था - '' हिंदी - उर्दू शिक्षण का वैश्विक परिप्रेक्ष्य '' (अमेरिका के विशेष संदर्भ में) जिसकी अध्यक्षता विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण ने की । अन्य वक्ता थे - अमेरिका के प्रो. हरमन वान ऑल्फेन, प्रो. जिश्नूशंकर और प्रो. सैयद अकबर हैदर । विषय का प्रवर्तन करते हुए डॉ. अरुण ने कहा कि विभिन्न देशों में अध्यापक शिक्षण में अपनी-अपनी विधि और पाठ्य सामग्री अपना रहे हैं । लेकिन यह अत्यन्त उपयुक्त होता कि हिंदी के पाठ्यक्रम का तो मानकीकरण हो ही, साथ ही शिक्षण-विधि और पाठ्य सामग्री का भी मानकीकरण हो जिससे सभी देशों में समान विधि और पाठ्य सामग्री का उपयोग किया जा सके । ऐसा करते समय स्थानीय आवश्यकताओं का भी पूरा ध्यान रखना होगा । डॉ. अरुण ने सचिवालय के उद्देश्य और कार्यों पर भी प्रकाश डाला।

दूसरा सत्र था - हिंदी - उर्दू शिक्षण का वैश्विक परिप्रेक्ष्य (यूरोप के विशेष संदर्भ में) । इसकी अध्यक्षता की प्रो. हरमन वान ऑल्फेन ने और प्रमुख वक्ता थे - पोलैंड की प्रो. दानुता स्तशिक, दक्षिण कोरिया के प्रो. आलोक रॉय, जर्मनी की प्रो. तात्याना ओरांस्काया और मॉरीशस की डॉ. विनोद बाला अरुण । सभी वक्ताओं ने अपने-अपने देशों में हिंदी - उर्दू शिक्षण की स्थिति का निरूपण किया । डॉ. विनोद बाला अरुण ने मॉरीशस में हिंदी शिक्षण की परंपरा पर एक पावर पायंट प्रस्तुति की । उन्होंने बताया कि कैसे विपरीत परिस्थितियों में हिंदी शिक्षण आरंभ हुआ और आज हिंदी ने प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक की यात्रा पूरी कर ली है । उन्होंने मॉरीशस में हो रहे सृजनात्मक लेखन की पृष्ठभूमि और उसके इतिहास का लेखा जोखा भी प्रस्तुत किया ।

संबोधित करते हुए डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण

तीसरे सत्र में ' जापान में हिंदी - उर्दू शिक्षण ' पर चर्चा हुई । इसमें वक्ता थे - प्रो. हिदेआकि इशिदा, प्रो. तेइजी सकाता, प्रो. योइचि युकिशिता, प्रो. हिरोको नागासाकी, प्रो. सुहेल अहमद खान, प्रो. मामिया केन्साकु, प्रो. यास्मीन सुल्ताना नकवी, प्रो. केई शिराई और प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण और अध्यक्ष थे - प्रो. सैयद अकबर हैदर । जापानी हिंदी विद्वानों के उच्चारण और भाषा कौशल को सभी ने खूब सराहा। सभी विद्वानों ने जापान में हिंदी - उर्दू सिखाते समय आने वाली कठिनाइयों का और उनके समाधान का बड़ा रोचक विवरण दिया ।

चौथे सत्र का विषय था - '' हिंदी - उर्दू शिक्षण में सूचना -प्रौद्योगिकी की उपयोगिता एवं कोश - निर्माण '' । अमेरिका के प्रो. जिश्नूशंकर की अध्यक्षता में भारत के श्री बालेंदु दाधीच, प्रो. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव, श्री नारायण कुमार और पाकिस्तान के प्रो. रऊफ पारेख ने अपने - अपने विचार रखे । सभी वक्ता इस बात पर पूरी तरह सहमत थे कि हिंदी - उर्दू शिक्षण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का पूरा उपयोग होना चाहिए ।

पाँचवा सत्र '' विदेशी भाषा के रूप में हिंदी - उर्दू शिक्षण : चुनौतियाँ एवं समाधान '' को समर्पित था । अध्यक्षा थीं - पोलैंड की प्रो. दानुता स्तशिक और प्रमुख वक्ता थे - पाकिस्तान के प्रो.मुइनउद्दीन अक़ील

और प्रो. तहसीन फिराकी, भारत के प्रो. हरजेंद्र चौधरी, प्रो. अरुण चतुर्वेदी और प्रो. हरीश नवल । सभी वक्ताओं ने चुनौतियों का उल्लेख करते हुए अपने ढंग से समाधान के उपाय भी बताये ।

छठे और अंतिम सत्र - ' हिंदी सिनेमा, नाटक एवं अन्य जन संचार माध्यमों का हिंदी - उर्दू शिक्षण में योगदान ' में जापान के प्रख्यात रंगकर्मी व दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र रहे प्रो. तोमिओ मिजोकामी, सुश्री मिवाको कोएजुका, श्री अखिल मित्तल, लोकप्रिय कवि डॉ. कुंवर बेचैन और पाकिस्तान की सुश्री फातिमा सुरैया ने अपने - अपने मत प्रस्तुत किए । अध्यक्षता की - तोक्यो के चर्चित नाटककार और उर्दू के व्याख्याता प्रो. युताका असादा ने । विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - प्रो. तोमिओ मिज़ोकामि जिन्होंने देश-विदेशों में 100 नाटक प्रस्तुत किए हैं और जिनकी हिंदी सुनकर दंग रह जाना पड़ता है । मॉरीशस में 2004 में उन्होंने नाटक प्रस्तुत किए थे । सुश्री कोएजुका जापान रेडियो पर बेहद लोकप्रिय हैं । उनकी वक्तृता शैली अभिभूत कर देती है ।

सभी वक्ताओं ने एक स्वर से स्वीकार किया कि फिल्मों, नाटकों और अन्य जन संचार माध्यमों का हिंदी - उर्दू शिक्षण में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है ।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे - ओसाका में भारत के कौंसलाधीश महामहिम श्री ओम प्रकाश । प्रो. ऋतुपर्ण ने संगोष्ठी की रिपोर्ट पढ़ी और समारोह की उपलब्धियों को रेखांकित किया । भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की प्रतिनिधि सुश्री राकेश कुमारी ने दोनों देशों और दोनों भाषाओं का एक साझा पाठ्यक्रम बनाने का सुझाव दिया और सुश्री परिमिता त्रिपाठी ने बात को विस्तार दिया । प्रो. फुजिई के हार्दिक उद्गारों और धन्यवाद ज्ञापन से यह सत्र समाप्त हुआ ।

समापन समारोह में मंचासीन प्रो. ताकेशि फुजिइ, ओसाका में भारत के कौंसलाधीश महामहिम श्री ओम प्रकाश, सुश्री परिमिता त्रिपाठी, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की प्रतिनिधि सुश्री राकेश शर्मा और प्रो. युताका असादा

अनेक कवि और शायर भी सम्मेलन में उपस्थित थे । अत: कवि-सम्मेलन बनाम मुशायरे का आयोजन भी हुआ । अध्यक्षता की-पाकिस्तान के प्रो. तहसीन फिराकी ने और संचालन किया प्रो. दानिश ने । भारत के डॉ. कुंवर बेचैन, डॉ. हरीश नवल, डॉ. हरजेंद्र चौधरी, डॉ. लालित्य ललित, श्री राकेश पांडेय और जापान में पढ़ा रहे पाकिस्तान के डॉ. सुहैल, भारत के प्रो. ऋतुपर्ण और प्रो. यास्मीन नकवी ने इसमें भाग लिया ।

इस सम्मेलन का सबसे सुंदर हिस्सा था - सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं

जापानी छात्रों द्वारा नाट्य मंचन

नाट्य मंचन जिसे उद्घाटन के पश्चात प्रस्तुत किया गया था । हिंदी के छात्रों ने प्रो. ऋतुपर्ण द्वारा लिखित नाटक ' अंगुलिमाल ' का मंचन किया जिसमें अंगुलिमाल और गौतम बुद्ध की भूमिकाएं निभाने वाली छात्राओं ने अपने अभिनय से सबको भावविभोर कर दिया। उर्दू के छात्रों ने राजेंद्र सिंह बेदी का लिखा नाटक ' नकल - ए- मकानी ' प्रस्तुत किया जो अत्यंत सराहा गया । जापानी छात्रा सुश्री उमीको ने कत्थक और सुश्री एरिको सुमियामा ने ' खाईके पान बनारस वाला ' गीत पर नृत्य कर सबको मुग्ध कर दिया ।

ललित कला के इस भावपूर्ण प्रदर्शन से सबने अनुभव किया कि जापानी छात्रों ने हिंदी को न केवल पढ़ा है बल्कि उसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया है । वस्तुत: किसी भाषा - शिक्षण की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है ।

आदरणीय भाई डॉ . राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी, 12.01.2009
सादर नमन ।

आपके दिसंबर अंक के संपादकीय में ठीक कहा गया है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम विश्व के अधिक देशों को हिंदी के इस वैश्विक अभियान में अपने साथ लेकर चलें । यह एक स्वेच्छा का कार्य है जिसके लिए सरकारी बैसाखी की आवश्यकता नहीं है । यह पुण्य कार्य तभी होगा जब विश्व के हिंदी भाषी इस विचार को बल देंगे।

मॉरीशस की इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद यह कार्य कर रही है और इसकी रिपोर्ट इस अंक में पढ़कर आशा जगती है कि विदेशों में बसे हिंदी वासी अपनी भाषा का परचम लिए आगे बढ़ रहे हैं । पत्रिका में महासचिव जी ने 'प्रवासी भारतीय दिवस' तथा 'विश्व हिंदी दिवस ' जैसे आयोजनों की ओर ध्यान दिलाया है जो हमारी भाषा को प्रोत्साहन और आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं । हिंदी सोसाइटी, सिंगापुर, हिंदी समाज, सिडनी, यू.के. हिंदी समिति जैसी संस्थाओं का विवरण इस पत्रिका के माध्यम से पढ़ कर आशा जगती है कि हिंदी को विश्व भाषा बनने में देर नहीं लगेगी।

'विश्व हिंदी समाचार ' के दूसरे वर्ष में प्रवेश करने के लिए बधाई ।
नववर्ष, लोहडी एवं मकर संक्रांति की शुभकामनाएँ ।
आपका

चंद्र मौलेश्वर, 01-8-28, यशवंत भवन, अलवाल, सिकंदराबाद - 500 010
आंध्र प्रदेश - भारत

बुदापैश्त में विश्व हिंदी दिवस

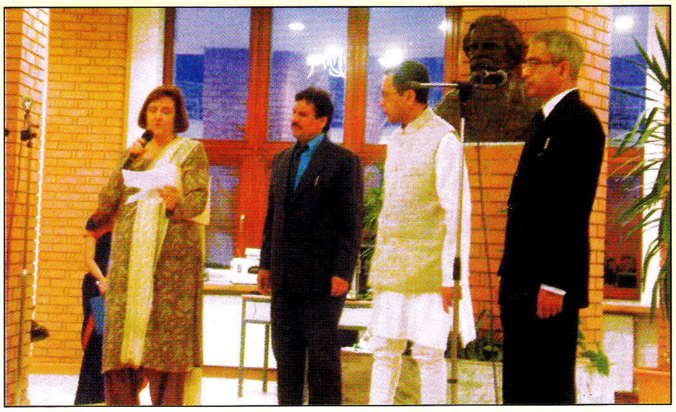

डॉ. मारिया नेज्यैशी, डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, हंगरी में भारत के राजदूत महामहिम श्री रंजीत रे व श्री वी. वी. मोहन

10 जनवरी, 1975 हिंदी के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दिन बन गया है । नागपुर में इसी दिन आरंभ हुए पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में देश-विदेश से आए हिंदी प्रेमियों ने एक साथ इस मंच से हिंदी का जयघोष किया था । वर्ष 2006 से यह दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। आजकल करीब-करीब हर देश में स्थित भारतीय दूतावास और स्थानीय हिंदी-प्रेमी मिल कर विश्व हिंदी दिवस मनाते हैं । 14 मार्च, 2009 को हंगरी की राजधानी बुदापैश्त में भारतीय दूतावास और एल्ते विश्वविद्यालय के भारोपीय अध्ययन विभाग ने सामूहिक रूप से विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया । जनवरी की बजाय मार्च में मनाए जाने का कारण यह है कि जनवरी की भयंकर सर्दी और बर्फबारी के कारण विश्वविद्यालय में अवकाश रहता है और अधिकांश छात्र अपने घरों को चले जाते हैं । इस बीच भारतीय दूतावास द्वारा चलाई जा रही हिंदी की कक्षाएँ भी स्थगित रहती हैं । इन दोनों कक्षाओं में पढ़नेवाले हंगारी छात्रों के हिंदी-प्रेम और भारतीय संस्कृति के प्रति उत्कट सम्मान की भावना को देखते हुए इस समारोह को यहाँ पर मार्च में अवकाश समाप्त होने के बाद मनाया जाता है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में हंगरी में भारत के राजदूत महामहिम श्री रंजीत राय ने हिंदी के बढ़ते हुए महत्व पर प्रकाश डालते हुए हंगारी लोगों के हिंदी और भारत-प्रेम की प्रशंसा की । भारत के प्रधानमंत्री का इस अवसर पर दिया गया संदेश भी पढ़ा । इस अवसर का महत्वपूर्ण आकर्षण था एल्ते विश्वविद्यालय के भारोपीय अध्ययन विभाग द्वारा प्रारंभ की गई भित्ति-पत्रिका 'प्रयास' का महामहिम द्वारा लोकार्पण । यह पत्रिका न केवल विश्वविद्यालय के भारोपीय अध्ययन विभाग अपितु हंगरी में प्रकाशित पहली हिंदी पत्रिका है । भारत से आए हिंदी के विज़िटिंग प्रोफेसर प्रमोद कुमार शर्मा की देखरेख में निकली इस पत्रिका के सभी लेखक-कवि हंगरी के वे लोग हैं जो किसी न किसी रूप से हंगरी में चलने वाली हिंदी कक्षाओं से जुड़े रहे हैं । इस पत्रिका की अनेक रचनाएँ मौलिक भी हैं। एल्ते विश्वविद्यालय के भारोपीय अध्ययन विभाग की अध्यक्षा डॉ. मारिया नज़्येशी ने यह विश्वास व्यक्त किया कि ' प्रयास ' नामक हंगरी की यह पहली भित्ति-पत्रिका भविष्य में हंगरी हिंदी प्रेमियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक सशक्त मंच प्रदान करेगी ।

इस अवसर पर प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रमुख आकर्षण पंका सोआमी के हंगेरियन नृत्य समूह द्वारा प्रस्तुत भारतीय नृत्य रहे । उंनकी तीनों प्रस्तुतियों-गणेश वंदना, भरत नाट्यम और दक्षिण भारत के लोक नृत्य ने सभी का मन मोह लिया । भारतीय संगीत पर नृत्य प्रस्तुत करती इन हंगेरियन नृत्यांगनाओं के मनमोहक नृत्य ने भारत और हंगरी की भावात्मक नज़दीकियों को मानो रेखांकित कर दिया । दूतावास की हिंदी कक्षाओं के छात्रों ने दो लघु नाट्य प्रस्तुतियाँ कीं । इनमें एक भारतीय व एक हंगरी कहानी थी । कुछ छात्र-छात्राओं ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, भवानी प्रसाद मिश्र, त्रिलोचन और कुँवर नारायण की कविताओं का ऐसा भावपूर्ण प्रस्तुतीकरण किया कि वहाँ उपस्थित भारतीय दर्शक तक मंत्रमुग्ध हो गए ।

हंगरी में भारतीय मूल के लोगों की संख्या बहुत कम है, अत: अपने देश तथा भाषा से जुड़े कार्यक्रमों में उनकी रुचि बहुत अधिक रहती है । विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर बुदापैश्त में बसे भारतीय लोगों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया । क्या बच्चे क्या बड़े सब हिंदी के रंग में रंगे हुए थे। नृत्य, गीत और कविताओं का जो सिलसिला शुरु हुआ वह तकरीबन तीन घंटे तक चलता ही रहा । अंत में सांस्कृतिक सचिव श्री मोहन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन तथा रात्रि भोज का आरंभ हुआ ।

(प्रस्तुति : डॉ. गीता शर्मा, 57 बी, पनोनिया उत्सा, बुदापैश्त, हंगरी, 1133) ●●

निवेदन

सचिवालय आपसे विनम्र अनुरोध करता है कि आप अपने देश में हिंदी के लिए कार्यरत संस्थाओं के पते हमें भेजें जिससे हम संबंधों का एक जीवंत प्रवाह एक-दूसरे के बीच स्थापित कर सकें और इसके माध्यम से हिंदी को उसका गौरवपूर्ण स्थान विश्व मंच पर दिला सकें ।